

॥ रमापत्यष्टकम् ॥

.. ramApatyashtakam ..

sanskritdocuments.org

July 26, 2016

---

# Document Information

---

Text title : ramApatyaShTakam

File name : ramApatyaShTakam.itx

Category : aShTaka

Location : doc\_vishhnu

Author : Swami Barhmananda

Language : Sanskrit

Subject : philosophy/hinduism/religion

Proofread by : PSA Easwaran psaeaswaran at gmail.com

Latest update : June 13, 2013

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

Site access : <http://sanskritdocuments.org>

## ॥ रमापत्यष्टकम् ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

जगदादिमनादिमजं पुरुषं शरदम्बरतुल्यतनुं वितनुम् ।  
 धृतकञ्जरथाङ्गगदं विगदं प्रणमामि रमाधिपतिं तमहम् ॥ १ ॥

कमलाननकञ्जरतं विरतं हृदि योगिजनैः कलितं ललितम् ।  
 कुजनैः सुजनैरलभं सुलभं प्रणमामि रमाधिपतिं तमहम् ॥ २ ॥

मुनिवृन्दहृदिस्थपदं सुपदं निखिलाध्वरभागभुजं सुभुजम् ।  
 हृतवासवमुख्यमदं विमदं प्रणमामि रमाधिपतिं तमहम् ॥ ३ ॥

हृतदानवदृप्तबलं सुबलं स्वजनास्तसमस्तमलं विमलम् ।  
 समपास्त गजेन्द्रदरं सुदरं प्रणमामि रमाधिपतिं तमहम् ॥ ४ ॥

परिकल्पितसर्वकलं विकलं सकलागमगीतगुणं विगुणम् ।  
 भवपाशनिराकरणं शरणं प्रणमामि रमाधिपतिं तमहम् ॥ ५ ॥

मृतिजन्मजराशमनं कमनं शरणागतभीतिहरं दहरम् ।  
 परितुष्टरमाहृदयं सुदयं प्रणमामि रमाधिपतिं तमहम् ॥ ६ ॥

सकलावनिबिम्बधरं स्वधरं परिपूरितसर्वदिशं सुदृशम् ।  
 गतशोकमशोककरं सुकरं प्रणमामि रमाधिपतिं तमहम् ॥ ७ ॥

मथितार्णवराजरसं सरसं ग्रथिताखिललोकहृदं सुहृदम् ।  
 प्रथिताद्भुतशक्तिगणं सुगणं प्रणमामि रमाधिपतिं तमहम् ॥ ८ ॥

सुखराशिकरं भवबन्धहरं परमाष्टकमेतदनन्यमतिः ।  
 पठतीह तु योऽनिशमेव नरो लभते खलु विष्णुपदं स परम् ॥ ९ ॥

इति श्रीपरमहंसस्वामिब्रह्मानन्दविरचितं श्रीरमापत्यष्टकं सम्पूर्णम् ॥

Proofread by PSA EASWARAN psaeaswaran at gmail.com

---


This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted for promotion of any website or individuals or for commercial purpose without permission.

---

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

---

was typeset on July 26, 2016

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

